

DELHIN/2007/20081 Date of Publication: 13/06/2023 DL(N)/202/2022-24

अध्यात्म सन्देश

मूल्य 10 रु.

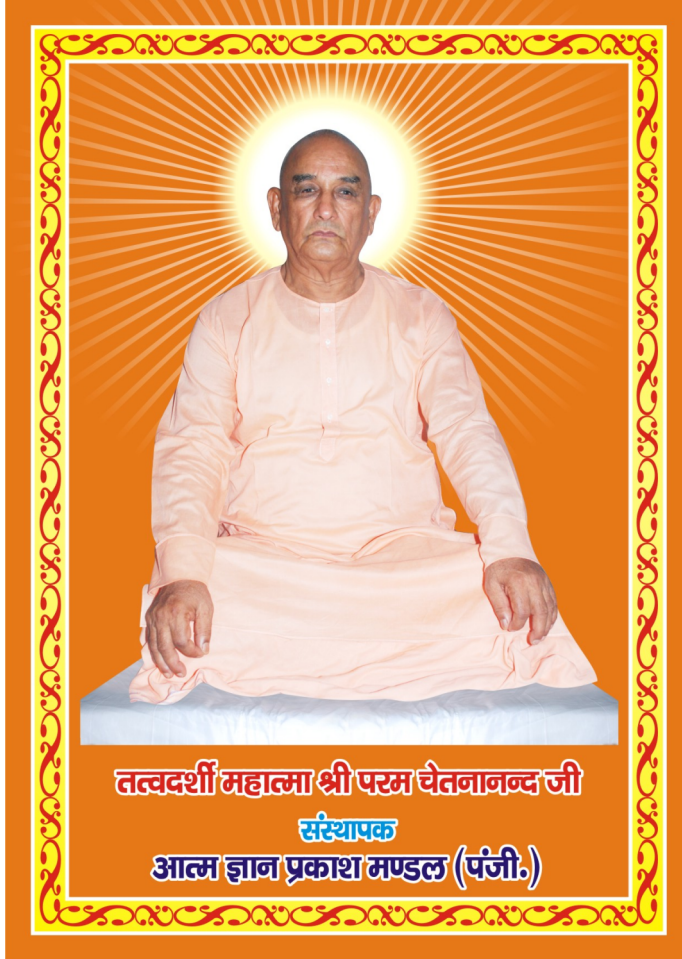
वर्ष-17

अंक-01

जून 2023

पृष्ठ 12

वजन 20 ग्राम



सत्संग भवन — सी.एस./ओ.सी.एफ. नं. 6, ब्लॉक-जी, सैक्टर-11, रोहिणी, दिल्ली-85

मो. : 9810344596, 011-27574151

ई-मेल: atmagyan@gmail.com

वेबसाईट: www.atmagyanprakashmandal.com

सम्पादक :

प्रेमी गजेन्द्र सिंह

बी-99, विजय विहार, फेस-2, दिल्ली-110085

इस अंक में प्रकाशित:-

1. आत्मज्ञान प्राप्त करना मनुष्य जन्म का सर्वोपरि लक्ष्य है।
2. अपरिग्रह मानव जीवन में सन्तोष उत्पन्न करता है।
3. सत्संग श्रवण करने से मानव के अन्दर सकारात्मक विचार उत्पन्न होते हैं।
4. साधना से ही मानव का अन्तःकरण पवित्र होता है।
5. आत्मबल बढ़ने पर ही मानव में कष्टों को सहन करने की क्षमता बढ़ती है।
6. अलौकिक अध्यात्म साधना शिविर एवं सत्संग का आयोजन।
7. पत्रिका के विषय में प्रेमी पाठकों के विचार।

महात्मा जी द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ:

1. चेतन योग दर्शन
2. अध्यात्म दर्शन
3. आध्यात्मिक जीवन के संस्मरण
4. फिलौस्फी ऑफ पीस (अंग्रेजी में)
5. अध्यात्म प्रेम उदगार
(कुमाँऊनी लोकगीत)
6. अध्यात्म ज्ञान ग्रंथ (भाग-1)
7. चेतन ज्ञान भजन माला पांच संस्करण
8. निष्काम कर्म योग दर्शन
9. रूहानी गुरु ज्ञान ग्रन्थ (भाग-1)

महात्मा जी द्वारा जारी
ऑडियो एवं वीडियो कैंसेट्स:

1. चेतन वाणी-1 (ऑडियो कैंसेट)
2. चेतन वाणी-2 (ऑडियो कैंसेट)
3. चेतन वाणी (कुमाँऊनी वीडियो कैंसेट)
4. चेतन वाणी (कुमाँऊनी ऑडियो कैंसेट)

संपादक की लिखित अनुमति के बिना इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को उद्धृत या उसका अनुवाद करना दण्डनीय अपराध होगा। किसी भी विवाद का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

सत्संग कार्यक्रम:- चेतन योग आश्रम में गर्मियों में 3.00 बजे से 5.00 बजे तक तथा सर्दियों में 2.00 बजे से 4.00 बजे तक प्रत्येक रविवार को 'अध्यात्म सत्संग' होता है। जिसमें सभी श्रद्धावान सुधी पाठकगण आमंत्रित हैं सत्संग सुनकर "अध्यात्म ज्ञान" प्राप्त करें और अपने जीवन को सफल बनायें।

संस्था का वेबसाइट : www.atmagyanprakashmandal.com है

आत्म ज्ञान प्राप्त करना मनुष्य जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य है

मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है इसलिए उसे चाहिए कि वह संसार में अपने कर्तव्य कर्मों को करते हुए अधिकांश समय आत्म-अनुसंधान में लगाये परन्तु वह अपने अन्दर जन्म-जन्मान्तरों से पाली गयी आशा तृष्णा एवं वासनाओं के नागपाल में फंसा हुआ ऐसा करने में असमर्थ रहता है वह संसार के बाहरी आकर्षण में फंसकर क्षण भंगुर सुख को ही आनन्द समझ बैठता है और उसे अपने आत्म तत्व के विषय में सोचने की भी सुध नहीं रहती है। जिन विषयों का मनुष्य रात दिन चिन्तन मनन व सोच विचार करता है तो स्वाभाविक रूप से मानव की उसी में आसक्ति, ममता और मोह हो जाते हैं और उसे यह लगने लगता है कि सांसारिक विषय ही जीवन का सार है इसके बिना जीवन सम्भव नहीं है इस प्रकार निरन्तर उन्हीं का अभ्यास करने से वह मनुष्य का स्वभाव बन जाता है उनके संस्कार चित्त की गहराई में जड़ जमा लेते हैं और मन में इनकी इच्छा हमेशा बनी रहती है इस प्रकार संसार की माया से परे जो अविनाशी आत्म तत्व है उससे उसका परिचय नहीं हो पाता है। परिचय न होने के कारण उस आत्म तत्व की ओर उसका आकर्षण भी नहीं हो पाता है क्योंकि मनुष्य उसकी ओर ही आकर्षित होता है जिसका उसे कुछ ज्ञान हो या जिससे उसकी पहचान हो। यदि मानव में यह विश्वास जग जाये कि संसार के भोगों एवं वैभव से परे भी कोई आनन्द है तो फिर व्यक्ति उसके प्रति आकर्षित हो सकता है परन्तु यह विश्वास उसमें तभी जग सकता है जब वह तत्वदर्शी सन्त से सत्संग में यह श्रवण करे कि संसार के नश्वर सुख भोगों से परे कोई अविनाशी, अपरिवर्तनशील शाश्वत आनन्द का स्रोत आत्मा उसी के अन्दर छिपा है वह सत्य नित्य ज्योति-स्वरूप और आनन्दमयी है उसे पा लेने के बाद और कुछ पा लेना शेष नहीं रह जाता है और उसे जानने के बाद कुछ जानना शेष नहीं रह जाता है। वास्तव में हमें जो कुछ भी बाहर संसार में सुख व सौन्दर्य दिखायी देता है उसका अपना कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है वह आत्मा के आधार पर ही ऐसा प्रतीत होता है जो जीवन का परम सत्य है और आत्मा के प्रकाश से ही यह सब कुछ प्रकाशित हो रहा है संसार अन्य कुछ नहीं केवल आत्मा की ही अभिव्यक्ति है इससे जो कुछ भी अलग है वह असत्य एवं भ्रम है इसलिए हमारे अध्यात्म शास्त्र भी यही कहते हैं कि **“अस्तो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योर्तिगमय, मृत्योऽमृतं गमय”** इसके कथन द्वारा संसार से ऊपर उठकर आत्मा की ओर बढ़ने का ही आवाहन किया गया है क्योंकि ज्योति स्वरूप आत्मा ही अमृत स्वरूप है यह जानकर ही मानव आत्मतत्व को जानने का जिज्ञासु बनता है और अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करता है।

अपरिग्रह मानव जीवन में संतोष उत्पन्न करता है।

अपरिग्रह अर्थात् अधिकांश संग्रह न करना भी योग का एक अंग है इस जीवन शैली को हमें अपने जीवन में क्रियान्वित करना चाहिए। इससे जीवन में सन्तोष उत्पन्न होता है जिससे दिमागी परेशानी दूर होती है अपरिग्रह जैसे सद्गुण के अभाव में मानव अपने लक्ष्य से तो भटकता ही है साथ में अनेक समस्याओं से भी घिर जाता है। हम अपना सारा जीवन परिग्रह करने अर्थात् अधिक संग्रह करने में ही गुज़ार देते हैं अन्ततः असन्तुष्ट होकर ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं और फिर नया जन्म प्राप्त होने पर हम उसी भाग-दौड़ में लग जाते हैं यह सिलसिला जन्म-जन्मान्तरों तक चलता ही रहता है जब तक हम अपने अन्दर अपरिग्रह सद्गुण को धारण नहीं करते तब जीवन में सन्तोष उत्पन्न नहीं होता है जो सदा सन्तुष्ट रहता है वह सदा प्रसन्न रहता है। इन्द्रियाँ और विषयों के प्रति आसक्ति बड़ी बलवान होती है बड़े-बड़े विद्वान एवं संयमी व्यक्ति भी इनसे विचलित हो जाते हैं ये बड़ी लुभावनी होती है इसे ही माया कहा जाता है इन्द्रिय लोलुपता अमृत का पथ नहीं है इन्द्रियों का नेतृत्व स्वीकार करते जीवन यापन करना आत्म नाश का मार्ग खोलता है यह किसी भी प्रकार से कल्याण का मार्ग नहीं है जब मन रूपी घोड़ा बेलगाम हो जाता है तब इन्द्रियाँ भी उच्छृंखल हो जाती हैं और सारथी रूपी बुद्धि भी कामनाओं के प्रलोभन में आ जाती है तब आत्मा रूपी रथी को विनाश के गर्त में गिरने से नहीं रोका जा सकता है इस प्रकार एक बार पतन शुरू हुआ तो फिर रुकने का नाम नहीं लेता है हम जैसा चिन्तन करते हैं जैसा संकल्प करते हैं वैसा ही बन जाते हैं हम मन में जैसी धारणा बनायेंगे जिसका ध्यान करेंगे वह अवश्य हमारे पास पहुँच जायेगा। भोगों का ध्यान करने से मन उन्हीं में जायेगा और मन को उनसे ही राग हो जायेगा और वह उन्हीं में रच-पच जायेगा। मन में कामनाओं की पूर्ति न होने पर क्रोध आयेगा क्रोध से कामना को पूरी करने में ईर्ष्या होने लगेगी वह असत् को सत् और नकल को असल समझने लगेगा। इस प्रकार वह भ्रम में फंस जाता है और अपने कर्तव्य कर्म को भूल कर वास्तविक आनन्द से वंचित रह जाता है उसका विवेक गायब हो जाता है मानव के विवेक शून्य होने पर जीवन का वास्तविक पथ दिखायी नहीं देता है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार वैराग्य के बिना कोई अपने जीवन को परोपकार में नहीं लगा सकता है। महात्मा गाँधी जी भी कहते थे कि जो व्यक्ति अपने लिए जरूरत से ज्यादा वस्तुओं को इकट्ठा करता है वह एक तरह से हिंसा ही करता है इसीलिए कबीरदास जी परमात्मा से प्रार्थना करते हुए याचना करते हैं कि:-

साईं इतना दीजिये, जामे कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ साधु न भूखा जाय।।

परन्तु आज हर व्यक्ति अपने जीवन में मात्र भौतिक साधनों को अधिक से अधिक जुटाने तथा अपने आपको धनवान बनाने के लिए झूठ-कपट धोखा, ईर्ष्या और स्वार्थ जैसे कार्यों को महत्व देता है ये सब अपरिग्रह को न अपनाने के कारण ही होते हैं। सादा जीवन उच्च विचार अपरिग्रह की प्रथम सीढ़ी है इस प्रथम सीढ़ी पर पैर रखकर ही हम ऊपर की मंजिल पर चढ़ सकते हैं ज्यादातर लोग अपरिग्रह जैसी महत्वपूर्ण चीज को नज़र अन्दाज़ कर देते हैं जब कि यह जीवन में बड़ी लाभप्रद होती है। अपरिग्रह का महत्व न समझने के कारण ही, मनुष्य जीवन भर भौतिक वस्तुओं को अधिक से अधिक संग्रह करने में लगा रहता है और सच्चे मार्ग को भूल जाता है। हमें जितना जीवन के लिए आवश्यक है उतना ही रखना चाहिए अत्यधिक संग्रह की प्रवृत्ति से बच जाना चाहिए यदि आवश्यकता से अधिक धन हो तो उसे सेवा और परोपकार में ही लगा देना चाहिए किसी सज्जन पुरुष ने सही कहा है कि—

ज्यों जल बाढ़े नाव में घर में बाढ़े दाम।
दोरु हाथ उलीचिये यही सज्जन को काम॥

भजन

रूहानी गुरु को न तूने जाना रे।
रहा हरदम दुनिया में दीवाना रे॥
झूठ कपट और राग द्वेष में सुबह विताई शाम।
प्रेम सहित सच्चे गुरुवर का लिया न तूने नाम॥
इसमें करता है लाखों बहाना रे। रहा
धन दौलत से एक दिन तेरा खाली होगा हाथ।
अन्त समय में रूहानी गुरु का भजन चलेगा साथ॥
भक्ति का भरले तू खजाना रे। रहा.....
जो करता है आज ही करले कल की जाने कौन।
सुमरन साधन निशदिन करले क्यों बैठा है मौन॥
ना जीवन को विरथा गंवाना रे। रहा
अष्ट पहर में सोवत जागत नाम सुमर ले बन्दे।
कट जायेगे सब तेरे जनम मरण के फन्दे॥
इससे ज्यादा क्या तुझे समझाना रे। रहा....

सत्संग श्रवण करने से मानव के अन्दर सकारात्मक विचार उत्पन्न होते हैं

मानव के मन की गति बड़ी विचित्र है। इसका स्वभाव पानी की तरह नीचे की ओर बहने वाला होता है इसलिए मन में उठने वाले अधिकाँश विचार नकारात्मक एवं संशयात्मक होते हैं। इन नकारात्मक विचारों को सकारात्मक बनाने के लिए सच्चे संत का सत्संग श्रवण करना चाहिए क्योंकि सत्संग में सत्य की चर्चा एवं असत्य का खण्डन किया जाता है। सत्संग से सभी संशयों का निवारण भी किया जाता है इसी लिए कहा गया है कि:—

सतसंगत मुद मंगलकारी, संशय विहग उड़ानहारी।

सत्संग में समझाया जाता है कि मनुष्य जन्म का उद्देश्य संसारी भोग नहीं बल्कि योग है अर्थात् आत्मा-परमात्मा का मिलन है। मानव भौतिक ज्ञान प्राप्त कर हमेशा सकाम कर्मों में लिप्त रहता है जिससे वह हमेशा कर्म बन्धन में ही बंधा रहता है परन्तु जब मानव अध्यात्म ज्ञान प्राप्त कर लेता है तब वह निष्काम कर्म में प्रवृत्त हो जाता है। यह ज्ञान मन, बुद्धि व चित्त के मैले को धोकर उन्हें निर्मल बना देता है जिससे मानव का जीवन निष्पाप हो जाता है। जीवन में नयी क्रान्ति, ऊर्जा, और प्रकाश का संचरण होने लगता है। मानव भौतिक पूजाओं को करता हुआ अध्यात्म जगत में प्रवेश नहीं कर सकता है। भौतिक पूजाओं से मनुष्य जनम के उद्देश्य की पूर्ति नहीं होती है। अध्यात्म हमारे जीवन का मूल है वहीं से हमारा जन्म हुआ वहीं से पालन होता है और वहीं से ऊर्जा एवं प्रकाश मिलता है। जैसे किसी पेड़ का आधार उसकी मूल (जड़) होती है मूल के बिना पेड़ का पालन-पोषण वृद्धि एवं विकास सम्भव नहीं है वैसे ही हमारे जीवन का आधार अध्यात्म है। अध्यात्म के बिना जीवन का कोई अस्तित्व नहीं है। हम क्षण-भंगुर एवं परिवर्तनशील शरीर नहीं हैं हम तो इस शरीर को चलाने वाली अविनाशी आत्मा हैं इसको जान लेना ही आत्म ज्ञान है। शरीर तो एक पड़ाव मात्र है जैसे एक यात्री अपनी यात्रा में विश्राम के लिए जगह-जगह पड़ाव डालता है ऐसे ही जीवात्मा विभिन्न योनियों में अपने कार्यों के अनुसार विचरण करती है। हमें पिछले जन्मों में किये गये पुण्य कर्मों से यह मनुष्य योनि मिली है इसी में आत्म ज्ञान

प्राप्त करके इस मनुष्य जन्म को सफल बनाया जा सकता है यदि हमें इस मनुष्य योनि में तत्त्वदर्शी सन्त नहीं मिले तो यह हीरा जैसा मनुष्य जन्म व्यर्थ चला जाता है। आत्मा

इस शरीर में स्थित एक महाशक्ति है जिसका अनुभव अध्यात्म ज्ञान से ही हो सकता है इसी महाशक्ति के रहते हुए शरीर द्वारा अनेक कार्य होते हुए दिखायी देते हैं परन्तु इस शक्ति को इन बाहरी चर्म चक्षुओं से नहीं देखा जा सकता है यह तो दिव्य दृष्टि भीतरी आँख जिसे ज्ञान दृष्टि भी कहा जाता है उससे ही देखी जा सकती है। अध्यात्म ज्ञान से मानव के अन्दर आत्मिक बल बढ़ता है अध्यात्म ज्ञान अन्दर से उपजने वाला ज्ञान है जो आत्मा से उपजता है यह ज्ञान सत्य सनातन अमर ज्ञान है। निरन्तर साधना एवं निस्वार्थ सेवा से जीवन निस्वार्थी एवं निष्पाप होता है अन्दर से हर जीव के प्रति दया भाव प्रकट हो जाता है। इस प्रकार साधक के जीवन में आमूल चूल परिवर्तन हो जाता है मन में उच्च कोटि के सकारात्मक विचार उत्पन्न होने लगते हैं। उसकी वाणी में मधुरता आ जाती है और अमृत खुशबु पैदा हो जाती है। मनुष्य के चेहरे पर एक नयी चमक दिखायी देने लगती है। इसके अन्दर नकारात्मक विचार पैदा नहीं होते हैं जिससे वह भोगों के प्रति आकर्षित नहीं होता है इस प्रकार मानव के भौतिक एवं अध्यात्मिक जीवन में संतुलन स्थापित हो जाता है उसका जीवन आनन्दमय बन जाता है गुरु आज्ञा में रहने से उसके ऊपर गुरु कृपा बरसने लगती है।

भजन

तुझे कहाँ की निद्रा है छाई, उठ जाग रे मनवा हरनाई।

सारे जग मे सवेरा छाया, तू निद्रा से जाग न पाया।।

अमृत बेला है आई, उठ जाग रे मनुवा हरजाई।। (1)

पाँच भूत तेरे पीछे हैं, अपनी तरफ को सब खींचे हैं।

जरा समझ ले इनकी चतुराई, उठ जाग से मनुवा हरजाई।। (2)

गुरु ज्ञान का साधन करले, भव सागर से पार उतरले।

तू ले ले गुरु की शरणाई, उठ जाग से मनवा हरजाई।। (3)

चंचल मन अब दौड़िये मत ना प्रभु का दामन छोड़िये मत ना।

फिर होवे प्रभु की करुणाई, उठ जाग रे मनवा हरजाई।। (4)

चेतन योगी की अमृत वाणी, सुनकर नर हो आत्मज्ञान।

सेवक के मन को भायी, उठ जाग रे मनुवा हरजाई।। (5)

साधना से ही मानव का अन्तकरण पवित्र होता है

जब हम इस संसार से दृष्टिपात करते हैं तो हमें अधिकांश लोगों का जीवन दुख अशान्ति एवं चिन्ता से भरा दिखायी देता है। यदि इस विषय में गहराई से विचार किया जाये तो पता चलता है कि इन सबके पीछे कहीं न कहीं उनके कर्मों के संस्कार ही छिपे रहते हैं वे कर्म संस्कार ही उनका पीछा करते रहते हैं वे ही उनके चित्त सागर में दुख एवं अशान्ति की लहरें बनकर हमेशा उठते रहते हैं उन लहरों में वे अपने आपको असहाय एवं बेबस महसूस करते हैं इसलिए रोते बिलखते रहते हैं यदि उन्हें इन दुखों एवं क्लेशों से सदा के लिए मुक्त होना है तो उन्हें किसी तत्त्वदर्शी सन्त की शरण में जाकर सत्संग के माध्यम से इन दुखों का कारण जानना होगा कारण जानने के लिए उपरान्त उनके सामने नतमस्तक होकर आत्म ज्ञान प्राप्त करने की प्रार्थना करनी होगी। वे आपकी सेवा से प्रसन्न होकर आपको तत्त्व ज्ञान का उपदेश करेंगे वे जो साधना की विधि बतायेंगे उस साधना को जीवन में अपनाकर उसका निरन्तर अभ्यास करना होगा क्योंकि साधना से मानव का अन्तकरण पवित्र होता है अन्तकरण के पवित्र होने पर ही आत्मा-परमात्मा का दिव्य प्रकाश प्रकट होता है साधना के लिए गृह त्याग परम आवश्यक नहीं है घर में ही एकान्त स्थान पर बैठकर साधना का अभ्यास किया जा सकता है इसके लिए परमात्मा में पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास होना आवश्यक है श्रद्धा के बिना साधना में सफलता नहीं मिलती है। अपने अन्दर छिपी वासना-कामना तृष्णा एवं आसक्ति का त्याग ही वास्तविक त्याग एवं सन्यास है। मानव गृहस्थ में रहते हुए भी सत्यज्ञान के द्वारा परमात्मा की उपासना एवं निष्काम कर्म करते हुए जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। समर्पण से ही जीवन का मूल्य है अन्यथा जीवन निरर्थक है जिस प्रकार से ईंधन का ज्यादा मूल्य नहीं होता है परन्तु जब वह अग्नि में गिर जाता है तो प्रखर एवं अग्नि के समान चमकीला हो जाता है अग्नि ईंधन नहीं बनती बल्कि ईंधन को ही अग्नि बनना पड़ता है इस प्रकार परमात्मा के इशारे पर जीवन को समर्पित कर अपने वास्तविक स्वरूप को प्राप्त किया जा सकता है तथा योग साधना के द्वारा अपने जीवन को आनन्दमय बनाया जा सकता है। सजगता से निष्काम कर्म को अपनाकर आनन्द को प्रकट किया जा सकता है। साधक को साधना करते समय परमात्मा की ज्योति को निहारते हुए एकाग्रचित्त होकर अपने दिव्य स्वरूप को प्रकट करने का प्रयास करना चाहिए। मानव

को जीवन से भयभीत होकर भागना नहीं बल्कि जीवन को कुरुक्षेत्र बनाकर निष्काम कर्म द्वारा परमात्मा को पाना है। मनुष्य के अन्दर ही जो देवत्व छिपा है उसे देह, प्राण एवं मन के द्वारा पूर्ण विकसित करना है। जीवन से भागकर या संसार से भागकर हम अपने या संसार के अन्य लोगों के दोषों को तो दूर नहीं कर सकते बल्कि इसके लिए जीवन के झंझावातों से जूझना ही पड़ेगा और उन पर विजय प्राप्त करनी होगी। अपने जीवन के दीप को आत्मा के आलोक से आलोकित करना होगा। जब तक हम शरीर, मन एवं बुद्धि के स्तर पर जीते रहेंगे तब तक हमारा रूपान्तरण नहीं हो सकता। इसके लिए इनसे ऊपर उठकर जीवन जीने के तरीके में परिवर्तन करना होगा। हमें अपने अन्दर पनपने वाली अहंता, ममता, वासना को मिटाना ही होगा इसके लिए निरन्तर साधना करनी ही पड़ेगी। रामकृष्ण परम हंस कहा करते थे कि पीतल के बर्तन को यदि चमकीला रखना हो तो उसे प्रतिदिन मांजा और धोया जाना चाहिए जैसे सफेद वस्त्रों पर धूल जमकर उसे मैला कर देती है वैसे ही प्रकृति से प्राप्त भोजन व अन्य संसार के क्रिया कलाप अन्तःकरण को मैला करते ही रहते हैं उसे साधना के द्वारा ही पवित्र किया जा सकता है। कर्मों की धूल को हटाने का एक मात्र उपाय साधना ही है।

भजन

साधन करके परम पिता से जुड़ गया जीवन तार।
 अनहद गरजे अमृत वरसे चमके ज्योति अपार।।
 ज्ञान का झरना बड़ा सुहाना बरसे अखण्ड फुहार।
 अन्दर में आनन्द मिला खुल गये भाग्य हमार।।
 निशदिन साधन भजन से हो गये पवित्र विचार।
 जीवन नैया संभल गयी गुरु मिले पतवार।।
 निराकार ब्रह्म इस जीवन में हो गये अब साकार।
 अपने अन्दर मिल गया अमृत ज्ञान भण्डार।।
 ज्ञान खटोला उड़ा गगन में सेवक शब्द सवार।
 ब्रह्म सागर में लगी समाधि जल गये सभी विकार।।
 झूठी माया, झूठे बन्धन झूठा सब संसार।
 चेतन योगी गुरु कृपा से हो गये भव से पार।।

आत्मिक बल बढ़ने पर ही मानव में कष्टों को सहन करने की क्षमता बढ़ती है।

आत्म बल इस संसार के सबसे शक्तिशाली तत्वों में से एक है संसार के सभी लौकिक साधन, भौतिक सम्पदाएँ तथा शरीर का सामर्थ्य केवल जीवन निर्वाह करने एवं मनुष्य को सुरक्षित रखने मात्र की क्षमता प्रदान करते हैं परन्तु यदि मनुष्य के अन्दर आत्म बल जागृत हो जाये तो वह मानव को महामानव तथा मनुष्यत्व में देवत्व का उदय कर देता है आत्म बल अन्दर प्रसुप्त दिव्य शक्तियों को जाग्रित कर आत्म चेतना का अनुभव कराता है जिससे मानव लौकिक जगत से परे अलौकिक जगत को भी देख लेता है उसके अन्दर आत्म चेतना का जागरण अनेक नर एवं नारियों के जीवन को उत्थान एवं श्रेय के मार्ग पर आगे बढ़ाता है संसार की सुख सुविधाओं का उपभोग करने वाले व्यक्ति सामान्य स्तर का जीवन ही जीते हैं परन्तु आत्मिक बल के धनी व्यक्ति परमानन्द की अनुभूति कर ब्रह्माण्ड में स्थित परमात्मा की चेतना के साथ अपनी एकात्मकता स्थापित कर आत्म बल को इतना बढ़ा लेते हैं कि वे संसार के प्रवाह को पलट देने का सामर्थ्य रखते हैं उनके अन्दर तूफानों को थाम लेने की और आँधियों के रूख को मोड़ देने की क्षमता पैदा हो जाती है। उनके अन्दर संकल्प सिद्धि, साहस, पराक्रम, तप और कष्टों को सहने की क्षमता प्रकट हो जाती है जिस साधक में आत्म बल बढ़ जाता है उस साधक की परीक्षा परमात्मा भी बार-बार उसी प्रकार लेते हैं जिस प्रकार आवे से निकले बर्तनों को कुम्हार बार-बार ठोक बजाकर देखता है कि ये कहीं से टूटे हुए तो नहीं हैं। अध्यात्मिक प्रक्रियाओं का उद्देश्य आत्म चेतना को जाग्रित कर आत्मबल को बढ़ाना है यदि व्यक्ति घंटों पूजा पाठ करे परन्तु आत्म बल की दृष्टि से वह शून्य हो तो उसका कोई मूल्य नहीं है। आत्म जागरण से प्राप्त आत्म बल एक चुम्बक की भाँति काम करता है जैसे चुम्बक लोहे को अपनी ओर खींच लेती है उसी प्रकार से आत्मबल भी दिव्य शक्तियों को अपनी ओर खींच लेता है और संसार के व्यक्ति भी आत्मबल के धनी की ओर आकर्षित होने लगते हैं। उन्नति के मार्ग पर चलने के लिए किसी पर भी प्रतिबन्ध नहीं है वह सबके लिए समान रूप से खुला है जो परमात्मा के विधान के अनुसार परमात्मा को ही सर्वस्व मानकर अपने अन्दर आत्म जागरण कर आत्मिक बल को बढ़ा लेते हैं वे अपने अन्दर ऐसी योग्यता उत्पन्न कर लेते हैं कि उसके अन्दर छिपी अनेक दिव्य शक्तियाँ प्रकट हो जाती हैं जो उसे मानव से महामानव बनाकर उसका उद्धार कर देती हैं।

अलौकिक अध्यात्म साधना शिविर एवं सत्संग का आयोजन

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल रोहिणी दिल्ली संस्था द्वारा अलौकिक साधना शिविर एवं सत्संग का आयोजन दिनांक 20.05.23 से 21.05.23 तक "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी, सैक्टर-11, दिल्ली-85 में मुक्तात्मा श्री परम चेतनानंद जी के परमसेवक महात्मा श्री निर्मलानन्द जी के तत्वाधान में हुआ जिसमें दिल्ली उत्तर-प्रदेश, हरियाणा के विभिन्न केन्द्रों से साधक एवं साधिकाएँ सम्मिलित हुए शिविर में प्रतिदिन दो पारियों में साधना का अभ्यास कराया गया। महात्मा जी ने सत्संग प्रवचन करते हुए प्रेमियों को बताया कि अन्तकरण की पवित्रता के लिए प्रतिदिन साधना अवश्य करनी चाहिए। साधना से साधक का मन निर्मल हो जाता है। जिससे मन में पवित्र विचार आते हैं उसे परमात्मा की याद निरन्तर बनी रहती है उसके अन्दर परमात्मा के प्रति निस्वार्थ प्रेम उपजता है जिससे प्रेमी का जीवन निस्वार्थ बन जाता है। साधना से सेवा एवं समर्पण का भाव प्रकट हो जाता है। इस प्रकार साधक निष्काम कर्म द्वारा अपने जीवन को सफल बना लेता है। प्रेमियों ने भी अपने विचार प्रकट किये महिलाओं ने गुरु महिमा के भजन सुनाकर वातावरण को आनन्दमय बनाया। दिनांक 22.05.23 को प्रातः साधना एवं प्रसाद वितरण के बाद शिविर का समापन हुआ।

पत्रिका के विषय में प्रेमी पाठकों के विचार

- 1: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका में अध्यात्म उद्गार प्रेमियों को निष्काम कर्म करने के लिए निरन्तर प्रेरित करते रहते हैं जिससे सेवक के अन्दर निस्वार्थ प्रेम प्रकट होता है।
— रामनाथ शर्मा (कल्याणपुर, मेरठ)
- 2: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका का अध्ययन मानव को अध्यात्म ज्ञान का जिज्ञासु बना देता है मानव जीवन के लिए अध्यात्म ज्ञान की बड़ी महत्ता है उसके बिना मनुष्य जीवन भी पशु के समान है।
— सुरेन्द्र सिंह पथौली (मेरठ)
- 3: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका का प्रत्येक अंक सारगर्भित है यह पत्रिका जीवन की दिशा एवं दशा को बदलने वाली सर्वोत्तम पत्रिका है। इसे पढ़कर सामान्य व्यक्ति भी अध्यात्म से जुड़ सकता है।
— शिव कुमार जेवर (गौतम बुद्ध नगर)
- 4: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका के द्वारा प्रेमियों को सेवा एवं साधना का महत्त्व निरन्तर समझाया जाता है साधना एवं सेवा से सेवक का कल्याण सुनिश्चित है। साधना साधक के जीवन को उच्च स्थिति में पहुँचा देती है।
— रामा देवी, अवन्तिका, दिल्ली-85

आत्म ज्ञान प्रकाश मंडल संस्था द्वारा एक अलौकिक अध्यात्म साधना शिविर एवं सत्संग का आयोजन

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल रोहिणी दिल्ली संस्था द्वारा अलौकिक साधना शिविर एवं सत्संग का आयोजन दिनांक 20.05.23 से 21.05.23 तक "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी, सैक्टर-11, दिल्ली-85 में मुक्तात्मा श्री परम चेतनानंद जी के परमसेवक महात्मा श्री निर्मलानन्द जी के तत्वाधान में हुआ। सत्संग में अन्य प्रेमियों ने भी ज्ञान एवं भक्ति के विषय में अपने विचार व्यक्त किये भक्ति विषयक भजन भी सुनाये। आरती एवं प्रसाद वितरण के बाद सत्संग का समापन हुआ।



प्रकाशक एवं मुद्रक महात्मा निर्मलानन्द जी (संरक्षक), चेतन योग आश्रम, सी. एस./ओ.सी.एफ. नं. 6, ब्लॉक जी, सैक्टर-11, रोहिणी, दिल्ली-85 से प्रकाशित एवं प्रिंटिंग

सम्पादक : गजेन्द्र सिंह प्रेमी

मुद्रक : गैलेक्सी इन्टरप्राईसीस

ऑफिस नं० 3, ग्राउण्ड फ्लोर, प्लॉट नं० 165, नियर चौपाल घर,

शिवा मार्केट, पीतम पुरा, दिल्ली-110034